पात्रानुकूल एवं परिवेशगत भाषा का सफलतम प्रयोग : सूर्यमुख

प्रो. एस.वी.एस.एस. नारायण राजू

हिन्दी विभागाध्यक्ष

तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय

फोन – 07418715584

यह सर्वविधित सत्य है कि रचनाकार अपने युग तथा समय की भाषा को खोजते हुए उस समय की स्थिति तथा बदलती हुई संवेदनाओं तथा स्थितियों को अभिव्यक्त करता है. हर लेखक की अपनी भाषा होती है , जो अपने परिवेश के अनुकूल भाषा का उपयोग करता है. साधारणत: किसी भी नाटक, कहानी, उपन्यास या गद्य की अन्य कोई भी विधाओं का जब भाषिक विश्लेषण किया जाता है तो उसके अन्तर्गत भाषा शैली, संवाद, शब्दावली, मुहावरे, लोकोक्तियाँ आदि सभी का अध्ययन किया जाता है. सूर्यमुख में डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने इन सभी बातों का विशेष ध्यान दिया है कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है. लेखक अपनी लेखनी द्वारा पहचाना जाता है, क्योंकि लेखक का अपने मूल परिवेश का अधिक प्रभाव रहता है. वह व्यक्तिगत जीवन तथा बाह्य जीवन में एक तरह की भाषा का उपयोग करता है तो अपनी लेखनी में उस तरह की भाषा का प्रयोग नहीं करता है. भाषा के स्तर पर भी नाटक अत्यंत समृद्ध और वैविध्यपूर्ण होते हैं. किसी भी विधा में शिल्प और कथ्य के अनुरूप ही भाषा ढाली जाती है. कथ्य की अनिवार्यताएँ अपने अनुकूल शिल्प और भाषा की तलाश कर लेती है. अच्छे नाटकों में कथ्य के साथ शिल्प और भाषा भी समृद्ध स्तर पर ही प्राप्त होती है. हिन्दी नाटक की भाषा में जो सृजनात्मक उपलब्धि दृष्टिगत होती है. उसका पूर्ण स्वरूप डॉ लक्ष्मीनारायण लाल में है.

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल की भाषिक संवादकीय संरचना का सशक्त आयाम उनके मिथकीय नाटकों में उजागर हुआ है इनमें उन्होंने युगीन समस्याओं को मिथक के माध्यम से व्यंजित करने का प्रयास किया है. 'सूर्यमुख' में डॉ लक्ष्मीनारायण लाल की भाषा सीधी एवं स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है. उन्होंने सरल शब्दों का प्रयोग किया है जो भाषा आम बोलचाल में बोली जाती है उसी भाषा का प्रयोग 'सूर्यमुख' में हुआ है, यथा --

रूक्मिनी : कौन हो तुम ?

वृद्ध : जय हो महारानी, मैं आपकी प्रजा हूँ. द्वारिका की रक्षा कीजिए. काल समुद्र का वेग हर दिन और भयानक होता जा रहा है उसको रोकने वाला केवल आपका पुत्र प्रदुम्न है.(1)

इस प्रकार डॉ . लक्ष्मीनारायण लाल ने ' सूर्यमुख' में स्पष्ट एवं सरल भाषा का प्रयोग किया है. डॉ लक्ष्मीनारायण लाल ने अपने नाटक सूर्यमुख में सरल तथा जीवंत भाषा का प्रयोग किया है. जहाँ शुद्ध हिन्दी के परिष्कृत प्रौढ शब्दों का प्रयोग किया है. वहीं प्रसंगानुकूल ग्रामीण पात्रों के मुहँ से गाँवों की बोलचाल के शब्दों का भी प्रयोग करके भाषा में प्रवाह और ओज बनाए रखा है. सूर्यमुख में द्वारिका की आम जनता की जो भाषा है उसे भी स्पष्ट रूप में दर्शाया है। यथा-

पहला : हम के बदे इहाँ पहरा दे रहे हैं ?

दूसरा : अरे मालिक परेम बदै। राजा करे परेम, परजा पहरा दे।

पहला : हम कोई परजा हैं हम भी तो यदुवंशी हैं। नाही गए महाभारत लडने तो का भवा ?

दूसरा : वही शिखंण्डी वाली महामारत ? सच हम महाभारत लडने गए होते तो शिखंडी से व्याह कै लेते।

पहला : हाँ भैया . ना मिली वेनुरति, शिखंडी ही सही और ठीक भी है अंतर ही का है? हाय रे हाय हम है परेम के पहरेदार"(2)

उपर्युक्त उदाहरण द्वारा पता चलता है कि लक्ष्मीनारायण लाल ने लोगो के मुख से उन्हीं की भाषा का प्रयोग करवाया है.

इस संदर्भ में मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि इस नाटक का पहला प्रदर्शन के समय पूरा नाटक शुध्द खडीबोली में ही लिखा था. परंतु नाटक देखते वक्त पूर्णत: संप्रेषण करने में तथा नाटक के मूल कथ्य को दर्शक तक पहुँचाने में विफल हुआ. नाटककार डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने पात्रों के अनुरुप भाषा का परिवर्तन किया.

इसी प्रकार राजमहल में रहने वाले लोगों की भाषा में शालीनता एवं शुद्ध भाषा का प्रयोग किया है. जैसे-

अर्जुन : शांत जाओ वेनु।

वेनु : शब्द से अर्थ की हत्या करने वाले लोग, तुम में इतना भी शील नहीं कि हमें विदा का एक क्षण तो देते.

रुक्मिनी : इस तरह यह वाचाल चुप नहीं होगा.

वेनु : मैं अंतिम सांस तक इस अंधेरी रात में अपने सूरज को पुकारती रहूँगी बस, अब इतना ही शेष है." (3)

उपर्युक्त उदाहरण में सरलता सजीवता और सत्यता बहुत सुन्दर बन पडी है. इस तरह डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने पात्रों के अनुरुप ही उनके मुख से उनकी भाषा का प्रयोग किया है जैसे पात्र हैं वैसे ही उनकी भाषा का प्रयोग करके लेखक ने 'सूर्यमुख' को और अधिक सफल व सशक्त नाटक बनाया.

संदर्भ : 1.डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - सूर्यमुख - पृ . सं . 63

2.डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - सूर्यमुख - पृ . सं . 36

3.डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - सूर्यमुख - पृ . सं . 130